यहोवा के उपकारों का बदला मैं उसे कैसे दूं?

अमेरिका में हर साल नवम्बर में धन्यवाद का एक विशेष दिन मनाया जाता है। बेशक, धन्यवाद पर दिए गए संदेश, विशेषकर प्रभु को धन्यवाद देने के लिए हर समय के लिए उपयुक्त होते हैं।

ऑस्ट्रेलिया के व्यापारिक केन्द्र सिडनी में जहां ऊंची-ऊंची इमारतें हैं, बन्दरगाह से कुछ दूरी पर, अंग्रेज़ विस्थापितों द्वारा की गई पहली धार्मिक सेवा की यादगार में एक भव्य स्तम्भ है।

अपने मन में यह तस्वीर बनाएं: वहां बसने वाले लोगों की पहली नाव, जिनमें अधिकतर दण्ड पाए हुए अपराधी और गुलाम थे, 26 जनवरी, 1788 को वहां पहुंचती है जो अब सिडनी की बन्दरगाह के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने वहां एक छोटी सी असज्य बस्ती बसा ली। 3 फरवरी को उन्होंने अपने देश में जाकर जल्दी से एक आश्रय स्थल बना लिया। बहुत से लोग रास्ते में ही मर गए; जो बचे थे उनके पास या तो बिल्कुल थोड़ी या कोई भी सज्पज़ि नहीं थी। उनके आस-पास केवल जंगल था जिसमें जंगली लोग रहते थे।

एक ठहराए हुए समय पर, रिचर्ड जॉन्सन नामक चैपलेन (प्रचारक) ने खड़े होकर कहा। उस अवसर के लिए कौन सी आयत उपयुज्त होगी? अय्यूब 5:7 आपको कैसी लगती है: ''जैसे चिंगारियां ऊपर ही ऊपर उड़ जाती हैं, वैसे ही मनुष्य कष्ट भोगने के लिए ही उत्पन्न हुआ है''? भजन 13:1 उपयुज्त लगता है: ''हे परमेश्वर तू कब तक? ज्या सदैव मुझे भूला रहेगा? तू कब तक अपना मुखड़ा मुझ से छिपाए रहेगा?'' जॉन्सन ने इन आयतों में से किसी को नहीं चुना। बल्कि उन्होंने भजन 116:12 चुना था: ''यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको ज्या दूं?'' इन लोगों पर कम उपकार हुए थे; परन्तु वे जीवित और स्वतन्त्र थे और भविष्य में उनके लिए प्रतिज्ञा थी। वे उस सबके लिए जो उनके पास था, परमेश्वर के आभारी थे।

अपना ध्यान उस प्राचीन समय के इकट्ठ से आज की किसी आराधना सभा की ओर ले आएं। हम मसीह में अपने मित्रों तथा प्रियजनों, भाइयों और बहनों के बीच रहते हैं। हम गुलाम नहीं बल्कि स्वतन्त्र हैं। हम में से अधिकतर लोग राजनीतिक रूप से स्वतन्त्र हैं, लेकिन मसीही लोगों को मिली स्वतन्त्रता आत्मिक है। प्रभु ने हमें बहुतायत से आशीष दी है। इसलिए हमारे लिए यह कहना कि ''यहोवा ने [हम पर] जितने उपकार किए हैं, उनका बदला [हम] उसको ज्या दें?'' उससे भी अधिक उपयुज्त है ।

हम पर किए जाने वाले उसके सब उपकार

आइए ''हम पर किए उसके उपकारों'' पर ध्यान देने से आरम्भ करते हैं। हमें चाहिए कि कभी-कभी परमेश्वर की ओर से मिलने वाली आशिषों को गिनें।

उसके आत्मिक उपकार

सबसे पहले हम पर उसके आत्मिक उपकार हैं। ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है'' (इफिसियों 1:3)।

हमारे लिए उसका सबसे बड़ा आत्मिक उपहार *अपने पुत्र* को देना है। ''ज़्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए'' (यूहन्ना 3:16)। मेरी तीन बेटियां हैं, लेकिन मनुष्यजाति के लिए मैं उनमें से एक को भी नहीं देना चाहता। परमेश्वर का केवल एक ही पुत्र था और उसने वह भी हमारे लिए दे दिया। ''परमेश्वर को उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो!'' (2 कुरिन्थियों 9:15)।

हमारे लिए उसका दूसरा अनुपम उपहार *बाइबल* है। बाइबल परमेश्वर का संपूर्ण और अंतिम प्रकाशन है। ''... उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भज़्ति से सज़्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है...'' (2 पतरस 1:3)। बाइबल हमें हर एक भले काम को करने की चुनौती का सामना करने के लिए तैयार करती है (2 तीमुथियुस 3:17)। हम आराधना करने वाले जीव हैं, और बाइबल हमें बताती है कि आराधना कैसे करनी है (यूहन्ना 4:24)। हम पापी मनुष्य हैं और बाइबल हमें बताती है कि हम उद्धार कैसे पा सकते हैं (मरकुस 16:15, 16)। हम कष्ट से भरे जीव हैं, और बाइबल हमें उस महान वैद्य के बारे में बताती है (मज़ी 9:12)। जब हम निराश होते हैं तो बाइबल हमें उत्साह का संदेश देती है। हम निर्बल हैं, यह हमें सामर्थ देती है। जब हम प्रसन्न होते हैं तो यह हमारे आनन्द को और बढ़ा देती है। निराशा में यह हमें आशा देती है। मृत्यु के बिस्तर पर यह हमें परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा जीवन देने की प्रतिज्ञा करती है।

इसके अतिरिज़्त सबसे बड़े दान के रूप में *उद्धार* का दान है। ''ज़्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6:23)।

उद्धार के दान से जुड़ा हुआ *कलीसिया* का अर्थात उस कलीसिया का उपहार है जो स्वर्ग से भेजी गई है (इफिसियों 3:10, 11), लहू से खरीदी गई (प्रेरितों 20:28), आत्मा से (इफिसियों 2:22), और महिमा से भरी है (1 कुरिन्थियों 15:23-26)। कलीसिया एक आत्मिक परिवार है जिसमें परमेश्वर हमारा पिता है (1 तीमुथियुस 3:15)। यह वह राज्य है जिस पर राजा के रूप में मसीह राज करता है (मज़ी 16:18, 19)। यह दाख की बारी है जिसमें हम मज़दूरी करते हैं (मज़ी 20:1)। यह परमेश्वर की सेना है जिसमें हम प्रभु की

ओर से युद्ध करते हैं (1 तीमुथियुस 6:12)। यह परमेश्वर का मन्दिर है जिसमें हम उसकी आराधना करते हैं (इफिसियों 2:21)। यह "सुरक्षा का जहाज़"[1] और "आश्रय नगर"[2] है जहां हमें सुरक्षा और उद्धार मिलता है (देखिए इफिसियों 2:16; प्रेरितों 20:28)।

इनमें, हम उसकी *"बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं"* जोड़ सकते हैं (2 पतरस 1:4)। बाइबल में आपको कौन सी प्रतिज्ञा ज़्यादा पसन्द है? मेरी पसन्दीदा प्रतिज्ञाओं में से कुछ इस प्रकार हैं:

> और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं (रोमियों 8:28)।
>
> किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर बात में तुज़्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सज़्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिल्कुल परे है, तुज़्हारे हृदय और तुज़्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी (फिलिप्पियों 4:6, 7)।
>
> ... ज़्योंकि उसने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा। इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा ज़्या कर सकता है (इब्रानियों 13:5, 6)।
>
> और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, ज़्योंकि उसको तुज़्हारा ध्यान है (1 पतरस 5:7)।
>
> पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7)।

अंत में, हम *स्वर्ग* के दान की ओर ध्यान लगाते हैं। उस अद्भुत जगह में परमेश्वर "[हमारी] आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; [ज़्योंकि] पहिली बातें जाती रहीं" (प्रकाशितवाज़्य 21:4)!

उसके भौतिक उपकार

परमेश्वर के आत्मिक प्रबन्ध अद्भुत हैं। लेकिन हम पर किए जाने वाले उसके भौतिक उपकारों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता।

उसने हमें *परिवार* दिए हैं जिनमें हमारे जीवन-साथी और बच्चे भी शामिल हैं। "भली पत्नी कौन पा सकता है? ज़्योंकि उसका मूल्य मूंगों से भी बहुत अधिक है" (नीतिवचन 31:10)। "... बुद्धिमान पत्नी यहोवा से ही मिलती है" (नीतिवचन 19:14)। "देखो, लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है"

(भजन संहिता 127:3)। किसी ने कहा है कि एक मसीही परिवार कली के समान है जिसका फल स्वर्ग है।

परमेश्वर हमें *जीवन की आवश्यक वस्तुएं* देता है। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने ज़ोर देकर कहा था कि परमेश्वर हमें ''हमारी दिन भर की रोटी'' देता है (मत्ती 6:11)। वह हमें और ''आकाश के पक्षियों को'' भोजन उपलब्ध कराता है (मत्ती 6:26)। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि यदि हम ''पहिले उसके राज्य और धर्म की खोज'' करें तो हमारी भौतिक आवश्यकताएं भी पूरी हो जाएंगी (मत्ती 6:33)।[3]

इसके अलावा, परमेश्वर ने हमें *शरीर* तथा स्वास्थ्य दिया है। जैसे दाऊद ने कहा है, हमें ''भयानक और अद्‌भुत रीति से रचा गया'' है (भजन 139:14)।

परमेश्वर हमारे लिए *शांति व स्वतन्त्रता* का भी प्रबन्ध करता है। 1 तीमुथियुस 2:1, 2 में बताया गया है कि ''... बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिए किए जाएं। राजाओं और सब ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं।'' संसार के बहुत से देशों में मसीही लोगों को अद्‌भुत राजनैतिक आशिषें मिली हैं जिसके कारण वे परमेश्वर की आराधना के लिए हर सप्ताह इकट्ठे हो सकते हैं।

हमें *सुन्दरता* के परमेश्वर के दान को भी नहीं भूलना चाहिए। हमारे चारों तरफ सुन्दरता ही सुन्दरता है: सूर्य, चांद, तारे; मौसम; वृक्ष तथा फूल; पशु और पक्षी। पौलुस ने ''जीवते परमेश्वर'' के बारे में बताया ''जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया है। ... उस ने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर, तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा'' (प्रेरितों 14:15-17)।

तो फिर, इन उपकारों के बदले में हम प्रभु को क्या दें?

कृतज्ञता के कारण हमें पूछना चाहिए, ''उसके इतने उपकारों के बदले में हम प्रभु को क्या दें?'' हम प्रभु की उदारता को कैसे ग्रहण करें? कल्पना कीजिए कि कोई आदमी मुझे एक सुन्दर घर, एक नई गाड़ी, और मेरे बैंक खाते में बहुत सा धन जमा करा देता है। फिर एक दिन यह दयालु आदमी मुझसे कहता है कि वह मेरे घर में एक रात रहना चाहता है और मुझे अगली सुबह उसे एयरपोर्ट ले जाने के लिए कहता है। मैं जवाब देता हूं, ''नहीं! आप तो बहुत ज़्यादा मांग रहे हैं! इससे मेरा और मेरी पत्नी का बहुत नुक़्सान होगा। मेरे पास समय नहीं है। इसके अतिरिक्त, एयरपोर्ट पर गाड़ी खड़ी करने के लिए मुझे काफी पैसे देने पड़ेंगे!'' इतनी छोटी बात कहने पर वह मुझे कृतघ्न ही कहेगा। प्रभु से इतनी आशिषें पाकर यदि हम उसे सकारात्मक जवाब नहीं देते तो क्या हम इस आदमी से भी अधिक कृतघ्न नहीं हैं?

हमारा प्रेम

हमें प्रभु को अपना प्रेम देना चाहिए। हमारे इस पाठ की आयत भजन 116 में मिलती है। इस भजन का आरम्भ इन शब्दों से होता है: ''मैं प्रेम रखता हूं, इसलिए कि यहोवा ने मेरे

गिड़गिड़ाने को सुना है'' (आयत 1)। नये नियम में इसे इस प्रकार दिया गया है: ''हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहिले उसने हमसे प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:19)।

हमारी सूची में प्रेम सबसे ऊपर है, ज़्योंकि प्रेम से दूसरे सकारात्मक प्रत्युज़र मिलेंगे। जब एक आदमी और उसकी पत्नी एक दूसरे से प्रेम करते हैं, तो ''विवाह के नियमों'' में से बहुत से नियमों का पालन अपने आप हो जाता है। जब हम परमेश्वर से सचमुच प्रेम करते हैं, तो हम वह सब करने को तैयार होंगे जिससे वह प्रसन्न होता है।

हमारा धन्यवाद

हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। भजन लिखने वाले ने यह पूछा था कि ''यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको ज़्या दूं?'' (भजन संहिता 116:12), कुछ आयतों के बाद उसने उज़र दिया, ''मैं तुझ को धन्यवाद बलि चढ़ाऊंगा, और यहोवा से प्रार्थना करूंगा'' (आयत 17)। नये नियम में पौलुस लिखता है, ''सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो'' (इफिसियों 5:20)।

अज़्सर हम धन्यवाद नहीं दे पाते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, सेनापति जॉर्ज पैटन ने अमेरिका की तीसरी सेना से विश्राम कैज़्प में एक सिपाही को भेजा। सिपाही ने उसे धन्यवाद देने के लिए एक पत्र लिखा। सेनापति पैटन का कहना था कि मैं पैंतीस वर्षों से सेना में हूं और मुझे किसी से धन्यवाद का यह पहला पत्र मिला है। बैंजेमिन फ्रेंकलिन ने कहा था, ''प्रत्येक व्यर्थ बात के जवाब की तरह हमें हर व्यर्थ चुप्पी का जवाब भी देना पड़ेगा।''

हमारा समय

हम अपने प्रेम और धन्यवाद को कैसे *व्यज़्त* करें? आइए अपने पाठ को हर सज़्भव व्यावहारिक बनाएं। हमें परमेश्वर को अपना समय देना चाहिए। पौलुस ने यह चुनौती दी है: ''इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। और *अवसर को बहुमोल समझो,* ज़्योंकि दिन बुरे हैं'' (इफिसियों 5:15, 16)। विरोध में कोई कह सकता है, ''तुज़्हें मालूम नहीं कि मैं कितना व्यस्त हूं। मेरे पास प्रभु को देने के लिए समय नहीं है।'' मान लीजिए कि डॉज़्टर आपको कहता है कि हर रोज़ एक घंटा अधिक विश्राम करें वरना आप मर सकते हैं। मान लीजिए कि डॉज़्टर कहता है कि आंखों के व्यायाम के लिए आधा घंटा रोज़ पढ़ें वरना आप अंधे हो सकते हैं। मान लीजिए कि आपके बच्चे का टीचर आपसे कहता है कि हर रोज़ एक घंटा अपने बच्चे को पढ़ाएं वरना वह फेल हो जाएगा। ज़्या फिर आपको समय मिल जाएगा? ज़्या आप समय *निकाल* लेंगे? आइए अपने प्रभु के लिए समय निकालें या ढूंढ़ें।

हमारे गुण

आइए हम अपनी उन योग्यताओं को जो उसने हमें दी हैं, उसके लिए दें। मज़ी 25:14-30 में तोड़ों के दृष्टांत से हमें शिक्षा मिलती है कि परमेश्वर ने हम सबको गुण दिए हैं और

हमें उनका इस्तेमाल उसकी महिमा के लिए करना चाहिए। उस दृष्टांत में, एक तोड़ा पाने वाले आदमी ने अपना वह तोड़ा भूमि में गाड़ दिया था। आइए हम अपनी योग्यताओं को उसके लिए इस्तेमाल करें ताकि हम पर उन्हें स्वार्थ, उदासीनता, नीमगर्म होने, भौतिकवाद या अभज़्ति की कब्रों में गाड़ने का दोष न लगे।

हमारा धन

हमें अपनी भौतिक सज़्पज़ियां भी प्रभु को देनी चाहिए। प्रेरितों 2 अध्याय में प्रारज़्भिक मसीहियों को प्रसन्न रहने वाले लोगों के रूप में दिखाया गया है ज़्योंकि ''वे ... आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे'' (आयत 46ख)। अपनी आशिषों को पहचानकर, उन्होंने अपनी-अपनी सज़्पज़ि में से जैसी जिसको आवश्यकता होती थी (आयत 45) देने में कोई हिचकिचाहट नहीं की। 2 कुरिन्थियों 8 अध्याय के अनुसार, मकिदुनिया के मसीही ''बड़े आनन्द'' में थे और इससे ''उनकी उदारता बहुत बढ़ गई'' (आयत 2) थी। यदि हम अपनी भौतिक आशिषों को परमेश्वर के काम को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल नहीं करते तो हमारा प्रेम एक दिखावा है।

हमारा सब कुछ

और भी बहुत कुछ कहा जा सकता था। मैं इस उज़र को यह कहकर समाप्त करता हूं कि हमें प्रभु को अपना ''सब'' कुछ देना चाहिए (देखें मज़ी 22:37)। आइए कम से कम एक बार फिर अपने पाठ की आयत में लौटते हैं। ''उनका बदला मैं उसको ज़्या दूं?'' पूछने के बाद भजन लिखने वाले ने कहा था, ''मैं यहोवा के लिए अपनी मन्नतें ... पूरी करूंगा'' (भजन 116:14; आयत 18 भी देखें)। अन्य शज़्दों में, वह कह रहा था, ''मैंने प्रभु से जो भी प्रतिज्ञा की है उसको पूरा करूंगा।''

मैंने और आपने मसीही बनने के समय यीशु को प्रभु मानकर अंगीकार किया था (प्रेरितों 8:36-38; रोमियों 10:9, 10)। उस अंगीकार में और उसके बाद लिए जाने वाले बपतिस्मे में हमने प्रभु को अपने जीवन सौंप दिए थे। जिसका अर्थ यह था कि हम हमेशा उसकी इच्छा पूरी करने की मन्नत मान रहे हैं।

सारांश

फ्रांसेस ई. हेवर्गल ने लिखा है,

> हे प्रभु मेरा जीवन ले ले, और इसे अपने लिए पवित्र कर ले;
>
> हे प्रभु मेरा प्रेम ले ले; तेरे कदमों में मैं इसे रखता हूं;
> मुझे ले ले कि मैं सदा के लिए तेरा हो जाऊं।[4]

हमारे ऊपर परमेश्वर के बड़े अच्छे उपकार हैं। ज़्या हम उसे अपनी अच्छी से अच्छी चीज़ें देंगे![5]

पाद टिप्पणियां

[1]नूह के समय जहाज़ में आने वाले लोग जल प्रलय से बच गए थे जबकि जहाज़ के बाहर रहने वाले नहीं बच पाए थे। [2]परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में आश्रय नगर उपलज्ध कराए थे, ये वे नगर थे जिनमें भागकर लोग सुरक्षित हो सकते थे (गिनती 35)। [3]प्रभु द्वारा जीवन की आवश्यक वस्तुएं उपलज्ध कराने के सज्बन्ध में, व्यवस्थाविवरण 8:18 और भजन 37:25 भी देखिए। [4]फ्रांसेस आर. हेवर्गल, ''टेक माई लाइफ़, एण्ड लैट इट बी,'' *सॉंग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संक. एवं संपा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लॉ.: हॉवर्ड पज़्लिशिंग कं. 1996)। [5]इस पाठ को तैयार करने के लिए, मैंने वेंडल विंज़्लर ''व्हट शैल आई रेंडर अनटू द लॉर्ड फ़ॉर ऑल हिज़ बेनेफिट्स टुवर्ड मी ?'' *गिविंग विद ए पर्पज़, ए प्रॉमिस एण्ड ए परफॉर्मेंस* (फोर्ट वर्थ, टेज़्सस,: विंज़्लर पज़्लिकेशंस, 1966), 165-89 से काफी कुछ लिया।